पोषण सुधरे तो लाखों बच सकते हैं तपेदिक से

भारत डोगरा

भारत में प्रति वर्ष तपेदिक से 23 लाख मरीज़ प्रभावित होते हैं, जो विश्व के किसी भी अन्य देश से अधिक हैं। हाल ही में (अगस्त 2014) 'दी नेशनल मेडिकल जर्नल ऑफ इंडिया' में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण अध्ययन में बताया गया है कि इनमें से दस लाख से अधिक केस अल्प-पोषण से नज़दीकी तौर पर जुड़े हैं। दूसरे शब्दों में, यदि पोषण में सुधार हो जाए तो प्रति वर्ष लाखों लोगों को तपेदिक की गिरफ्त में आने से बचाया जा सकता है।

यह अध्ययन हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (उत्तराखंड) व मैकगिल युनिवर्सिटी के अंतर्राष्ट्रीय टीबी सेन्टर के कुछ शोधकर्ताओं ने मिलकर किया है। अनुसंधान पत्र के मुख्य लेखक डॉ. अनुराग भार्गव ने बताया है कि भारत में बहुत से लोग टीबी बैक्टीरिया से संक्रमित हैं, पर जब शरीर की प्रतिरक्षा व्यवस्था मज़बूत होती है तो इस स्थिति में सक्रिय टीबी की ओर बढ़ने से रोका जा सकता है। प्रतिरक्षा के कमज़ोर होने या क्षतिग्रस्त होने की सबसे बड़ी वजह अल्प-पोषण है। पोषण की कमी ही मुख्य वजह है जो टीबी बैक्टीरिया से प्रभावित लोगों को सक्रिय तपेदिक की ओर ले जाती है। दूसरी ओर, पर्याप्त पोषण मिलने पर प्रतिरोधक क्षमता बनी रहने व तपेदिक से बचे रहने की संभावना बढ़ जाती है। अतः तपेदिक के प्रकोप को कम करने के लिए पोषण में सुधार करना ज़रूरी है।

डॉ. भार्गव ने आगे बताया कि हाल के समय में पोषण की स्थिति चिंताजनक रही है। योजना आयोग की मानव विकास रिपोर्ट ने देश में प्रति व्यक्ति कैलोरी व प्रति व्यक्ति प्रोटीन की उपलब्धि में गिरावट बताई है।

पोषण में सुधार न होने व गिरावट आने की स्थिति में टीबी नियंत्रण के अन्य उपाय सफल नहीं हो रहे हैं। अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार संशोधित राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम का तपेदिक के नए केस कम करने में कोई विशेष असर नहीं हुआ है। दवा के असरदार न होने या दवा प्रतिरोधी तपेदिक के केस अधिक आने के कारण भी तपेदिक का इलाज कठिन हो रहा है।

इस विकट स्थिति में इस अनुसंधान पत्र में उम्मीद की किरण के रूप में यह बताया गया है कि पोषण में महत्वपूर्ण सुधार से जहां अनेक अन्य लाभ भी मिलेंगे, वहीं नए लाखों संभावित मरीज़ों को टीबी की गिरफ्त में आने से भी बचाया जा सकेगा।

इस अनुसंधान से एक बार फिर सिद्ध हुआ है कि बीमारियों के प्रकोप को कम करने में पोषण सुधार की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है। दूसरी ओर, पोषण सुधार न हुआ तो मात्र दवाओं की अधिक उपलब्धि अपने आप में भूख व कुपोषण से पीड़ित मरीज़ों की बहुत मदद नहीं कर पाती है। ***(स्रोत फीचर्स)***